उदासीनता वक्र (Indifference Curve) (1)

MIC UG-V

हिक्स एवं ऐलन अर्थशास्त्रियों ने उदासीनता वक्र विश्लेषण की विचारधारा दिया है।

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता के व्यवहार का अध्ययन क्रमसूचक दृष्टिकोण के आधार पर किया जाता है।

परिभाषा — उदासीनता अनुसूची दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोगों को बताती है जिनसे किसी व्यक्ति को समान संतोष प्राप्त होता है। यदि इस तटस्थता अनुसूची को एक रेखा के रूप में दिखाया जाए तो हमें तटस्थता वक्र रेखा प्राप्त हो जाती है।

दूसरे शब्दों में, उदासीनता वक्र (तटस्थता वक्र रेखा) का प्रत्येक बिन्दु दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों के साथ-साथ सन्तुष्टि के समान स्तर को बताता है और इस वक्र का प्रत्येक बिन्दु वक्र के किसी दूसरे बिन्दु पर वरीयता नहीं रखता।

उदासीनता अनुसूची

संयोग	वस्तु-X	वस्तु-Y
A	1	20
B	2	15
C	3	11
D	4	8
E	5	6
F	6	5

उपर्युक्त सारणी यह दो वस्तुओं X एवं Y के ऐसे संयोगों का बिन्दु पथ है जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि देते हैं।

उदासीनता मानचित्र

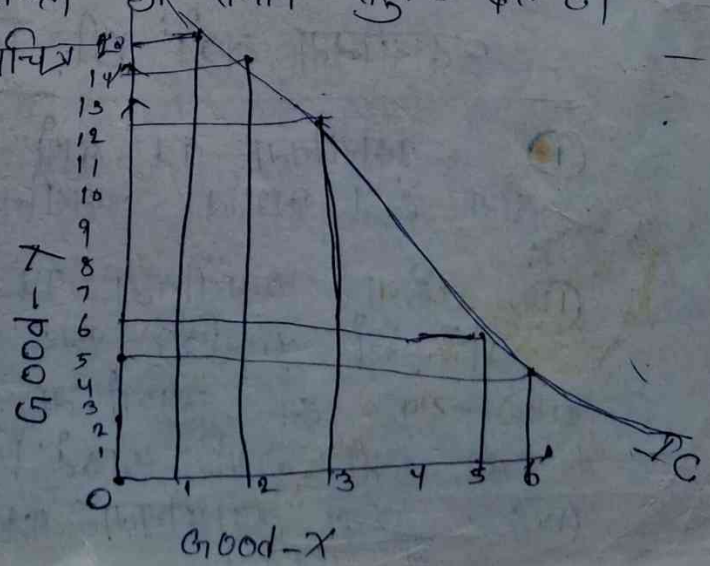

उदासीनता वक्र विश्लेषण की मान्यताएँ

(I) उपभोक्ता का विवेकपूर्ण व्यवहार.

(II) क्रमवाचक दृष्टिकोण — उदासीनता वक्र विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि उपभोक्ता संयोग से प्राप्त संतुष्टि को एक वरीयता क्रम प्रदान कर सकता है। क्योंकि इसकी मात्रात्मक माप असम्भव है।

(III) उपभोक्ता का संगत व्यवहार — इस मान्यता के अनुसार यदि उपभोक्ता उपभोग के लिए उपलब्ध दो संयोग A और B के मध्य उदासीन है तथा संयोग B तथा संयोग C के मध्य भी उदासीन है तो वह संयोग A और संयोग C के मध्य भी उदासीन होगा।

(IV) घटती हुई सीमान्त प्रतिस्थापन दर — अर्थात उपभोक्ता यदि उपभोग की एक वस्तु की मात्रा बढ़ता चला जाता है तो प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के बदले वह दूसरी वस्तु की कम मात्रा का त्याग करने को तैयार होता है।

(V) वस्तु की कीमतें, उपभोक्ता की आदत, रूचि एवं आय में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

(VI) दुर्बल क्रमबद्धता — इस मान्यता के अनुसार उपभोक्ता दो संयोगों के मध्य उदासीन तो हो सकता है किन्तु प्राप्त संयोगों में से एक संयोग को अन्य की तुलना में चुनकर अपनी वरीयता स्पष्ट नहीं कर सकता।

(VII) वस्तुएं एकरूप तथा विभाज्यनीय होना चाहिए।